Lecture Series NO:- 19,

Topic-

(1) Rationalism, Criticism;→

Dr. Sunita Kumari
Department of, Philosophy
B.A Part-II (H.)
Paper-II,
A.N.D. College, Shahpur Patory, Samastipur,

Ans:→ भारतीय दर्शन में Criticism :→ के बारे में बतलाया गया है/ आखिर हम कैसे इस पर गहनता पूर्वक विचार कर सकते है/

कुछ विचारकों ने बुद्ध के निर्वाण सम्बन्धी विचार की आलोचना की है/ :→

संसार में पायी जानेवाली सारी वस्तुएँ बुद्ध के अनुसार क्षणिक है/ निर्वाण की प्राप्ति संसार में ही संभव मानी गयी है/

अतः निर्वाण की क्षणिक है/ इसके अलावा जब कोई शाश्वत आत्मा है, ही नहीं तो निर्वाण की प्राप्ति कौन करेगा?

परन्तु इन आलोचनाओं में से

P.T.O

Scanned with CamScanner

प्रथम का ~~सवाल~~ जवाब यह कहकर दिया जा सकता है कि संसार (World) में (Criticism)

संसार अपनी समझता में वह क्षणिक हो सकता है। कुछ पलों के लिए बुद्ध ने ऐसी ही माना जा सकता है।

Individuality में नहीं

इन आलोचनाओं के अन्तर भी बौद्ध दर्शन में जितना महत्व द्वितीय आर्य सत्य का है, उतना ही महत्व निर्वाण का भी है।

निर्वाण का विचार बौद्ध दर्शन का एक महत्वपूर्ण विचार है।

इसके महत्व को ~~[illegible]~~ नकारा नहीं जा सकता।

बुद्ध ने अपने विचार में ऐसी भावनाओं के साथ बतलाये इन मतों को देखने में यह सब समानता पूर्वक यही बात बतलाया

P.T.O.

महात्मा बुद्ध ने बुद्धत्व की प्राप्ति के बारे में सर्वप्रथम काशी के निकट सारनाथ में अपना प्रवचन दिया जिसका संकलन धर्म चक्र प्रवर्तन सूत्र में मिलता है। इन बातों पर विचार करने पर यह सब बातों की आलोचना देखने को मिलती है।

इन चार आर्य तत्वों का अमृत संदेश जिसका संकलन धर्म चक्र प्रवर्तक सूत्र में मिलता है। यहाँ पर इन्होंने चार आर्य तत्वों का संदेश मानव को दिया है।

इन चार आर्य तत्वों में प्रथम दुःख के स्वरूप तथा दूसरा आर्य सत्य दुःख के कारणों का विवेचन उपस्थित करते हैं। महात्मा बुद्ध के अनुसार संसार का समस्त कार्य-व्यापार दुःखमय है। मानव की

END